SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: He has interrupted me unnecessarily because I have addressed you.

MR. CHAIRMAN: Everybody has heard you. You have shouted 'Devi Lal, Devi Lal' so much. Everybody has heard you.

(Interruptions)

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS—Contd.

प्रधान मंत्री (श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह) : माननीय सभापति जी, मैं माननीय सदस्यों का आभार प्रकट करना चाहता हूं कि उन्होंने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा में बहुत मूल्यवान योगदान दिया है। अगर कुछ तीखी बातें आई हों तो मैं नहीं मानता हूं कि वह किसी ऐसी भावना से आई हों जो केवल सरकार का चित्र खराब करने के लिए हों। मैं मानता हूं हम लोग जनतान्त्रिक भावना से चलना चाहते हैं। अगर हमारी योजनाओं में, हमारे कार्यक्रमों में सही मुद्दा है तो उसकी टिप्पणी से, आपके प्रहार से जैसे खराद पर कोई रत्न रखा जाए तो उस में चमक ही आएगी कोई घिसने वाला नहीं है। मैं क्षमा चाहता हूं कि जब सदन में बहस चल रही थी तो मैं यहां आप लोगों के बीच उपस्थित नहीं हो सका। मैं विदेश गया था नामीबिया में जहां सभी लोग आए हुए थे, बहुत महत्वपूर्ण अन्तरराष्ट्रीय कार्यक्रम था। लेकिन आप लोगों ने जो यहां पर विचार रखे उन्हें मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ा है। मैं कोशिश करूंगा कि उनका मैं उत्तर दूं और आपके साथ सहयोग करूं। उन बिन्दुओं में आने के पहले, मान्यवर, हम कुछ राजनैतिक क्षितिज पर कुछ व्यापक बातों पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। मैं नहीं कहता हूं कि राजनैतिक प्रक्रिया इस समय जो देश में चली है वह पूरी हो गयी है, ऐसा मेरा मानना, नहीं है। अभी उसको और भी परिपक्व होने की आवश्यकता है लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया जरूर शुरू हुई है।

आजादी के बाद एक दल, कांग्रेस मुख्यतः से रहा है और शायद एक विकासशील देश जो आजाद हुआ हो उसके राजनैतिक स्थायित्व के लिए यह बात आवश्यक भी रही। लेकिन जैसे जैसे वर्ष बीते, दशक बीते, वही की वही परिस्थिति बनी रही और सही अर्थ में जनता को कोई राजनैतिक विकल्प, आब्जेक्टिव रूप से उपलब्ध नहीं था। एक मुख्य दल कांग्रेस और परिधि में जो है विपक्ष के दल बने रहे। नतीजा यह रहा कि कोई एक विकल्प वोटर के पास नहीं था, अगर असंतोष हो भी कांग्रेस से तो वह किसी दूसरी जगह नहीं जा सकता था। मैं समझता हूं कि यह एक प्रक्रिया अब से शुरू हुई है कि सही अर्थ में उसके सामने एक विकल्प भी आया है। मैं नहीं समझता हूं कि पूरा हो गया है, या उसमें कमियां नहीं हैं, लेकिन एक शुरूआत हुई है। यह हम समझते हैं कि जनतंत्र के लिए एक स्वास्थ्यप्रद शुरुआत हुई है। हम सब लोगों पर जिम्मेदारी है कि उसको सही ढंग से ले जायें और साथ में हम यह भी नहीं चाहेंगे कि कांग्रेस समाप्त हो जाये या उसको एकदम . . . (व्यवधान) मान्यवर, जब हम इनकी बात कहते हैं तब ये विरोध करते हैं। हम आपकी बात कह रहे हैं. . . (व्यवधान) मान्यवर, आपसे अनुरोध करूंगा कि यह राज्य सभा है। इसकी कुछ मर्यादाएं रही हैं, यहां पर इतना शोरगुल, मान्यवर, कभी नहीं रहा। यहां की तो मर्यादा रखिए। यहां बात सुनी जाती थी, बहस की जाती थी। शांति-प्रियता और धीरज से इस सदन में सुना जाता है। मैं तो इनका यह शोर भी सुनता हूं . . . (व्यवधान) आपके शोर को भी मैं आदरपूर्वक सुनता हूं, कोशिश करता हूं। लेकिन आप बात तो सुनिये . . . (व्यवधान) मान्यवर, हमारे जनजीवन में गिरावट का एक यह भी कारण रहा है कि तर्क का स्थान शोर ने ले लिया है . . . (व्यवधान)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL (Punjab): We object to it. He is casting aspersions on the Members of Parliament. *(Interruption)* I am sorry the Prime Minister is stooping low to

cast aspersions on the Members of Parliament.

(*Interruptions*)

श्री मीर्जा इर्शादबेग (गुजरात) : यहां कोई बात कही जाती है, तो उसको शोर कैसे कहा जाए ।

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Sir, he does not remember that he is present in the Parliament. He is stooping low, Sir. (*Interruptions*)

इनके मेम्बर्ज ने क्या किया था ? मेम्बर्ज ने माईक तोड़ दिये थे ।

Sir, their Members intimidated the Chair in the past. The Janata Dal Members have rushed to the well and gheraod the Chair in the past.

(*Interruptions*)

श्री सभापति : जब सब लोग कुछ बोलते हैं, तो मेरी भी समझ में नहीं आता कि कौन क्या बोल रहा है ।

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Kindly ask for the record. What he has said is very much on the record. (*Interruptions*) It is a question of the prestige of the Parliament. The Prime Minister should not use such words.

(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Will one of you tell me what he has said?

श्री राम चन्द्र विकल (उत्तर प्रदेश) : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । . . . (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया (बिहार) : यह विपक्ष का जन्मसिद्ध तथा संवैधानिक अधिकार है कि . . . (व्यवधान)

श्री सभापति : कि एक साथ बोलें ।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : . . . . कि प्रतिवाद कर सकते हैं और अगर प्रतिवाद को शोर कहा जाए, तो यह विपक्ष का अपमान है । और वह अपमान प्रधान मंत्री महोदय ने किया है इसलिये उन्हें अपने वर्डस को विदड्रा करना चाहिए . . . (व्यवधान) यह पार्लियामेंट का . . . (व्यवधान)

श्री पवन कुमार बांसल : यह विपक्ष का नहीं पार्लियामेंट का अपमान है । . . . . (व्यवधान)

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): Sir, we want to listen to him. At the same time, he should not use these words and provoke us.

(*Interruptions*)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Sir, you know how quietly we were listening to the Prime Minister. He is out to provoke us. He is out to use derogatory language for the Parliament. That we are not permitting.

(*Interruptions*)

SHRI S. S. AHLUWALIA: Those words should be expunged from the record.

(*Interruptions*)

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश) : इन शब्दों को रिकार्ड से बाहर करिए । . . . (व्यवधान) प्रधान मंत्री को आप आदेश दें कि हमारे विचारों को शोर के रूप में संबोधित करने से इस सदन के समस्त सदस्यों का जो अपमान किया है इसके लिए वह खड़े होकर माफी मांगें, तब उन को बोलने का मौका दिया जाएगा, नहीं तो शोर किया जाएगा । यह इतने बड़े** आदमी हैं. . . . (व्यवधान) और संसद को आज समाप्त करने की बात कर रहे हैं ।

श्री राम चन्द्र विकल : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । उसको आप सुन लें ।

श्री सभापति : आप बोलिये ना ।

श्री राम चन्द्र विकल : प्रधान मंत्री जी ने अभी यह कहा कि यह उच्च सदन है । यहां की कुछ मर्यादायें रही हैं । यहां शोर-शार नहीं होना चाहिए । . . . (व्यवधान)

**Expunged as ordered by the Chair.

एक माननीय सदस्य : उन्होंने ऐसा नहीं कहा है ।

श्री राम चन्द्र विकल : यह बात सही है और मैं भी यही चाहता हूं कि मर्यादा रहे । पर मैं जानना चाहता हूं कि जब हम इधर थे और यह विपक्ष वाले उधर थे. . . (व्यवधान) एक मिनट मेरी बात सुन लीजिए जब विपक्ष के लोग आपकी चेयर तक जाया करते थे और आपको कई बार सदन छोड़ना पड़ा . . . (व्यवधान)

श्री सभापति : मैंने सदन कभी नहीं छोड़ा ।

श्री राम चन्द्र विकल : कई बार सदन छोड़ना पड़ा और सदन एडजर्न करना पड़ा कई बार । हमने तो अभी तक ऐसी कोई बात नहीं की जो इधर रह कर वह कारनामे कर चुके हैं । वह हमने तो नहीं किया है । इस पर आप बतायें कि यह क्या है ? . . . (व्यवधान) प्रधान मंत्री जी को समझ लेना चाहिए कि उधर के लोग क्या करते थे । यहां हम उस सीमा से बहुत पीछे हैं । . . (व्यवधान)

श्री सभापति : जो शब्द उन्होंने कहे, मैंने रिकार्ड मंगवा लिये हैं । उसमें उन्होंने कहा था कि "तर्क का स्थान शोर ने ले लिया है" ।

अब अगर सब लोग बोलेंगे, तो वह तर्क की बात तो नहीं रहेगी । एक-एक आदमी बोलेगा, तो काम चलेगा ।

SHRI A. G. KULKARNI (Maharashtra): I do not understand Hindi. Kindly repeat in English what he said.

MR. CHAIRMAN: His words were: "तर्क का स्थान शोर ने ले लिया है ।" (*Interruptions*). That is, in place of logic, there is din. That is how I will translate it. (*Interruptions*). In place of logic, there is din, din, din. Hulla-gulla, hulla-gulla hulla-gulla, in Marathi.

SHRI A. G. KULKARNI: Sir, I am on a point of order because now I understand what is the difficulty. (*Interruptions*). Sir, I would most humbly submit to you and through you with due respect to the Prime Minister that what he is saying is that, I have now understood it, that in this House, Rajya Sabha, instead of logic there is din etc. I have seen the Prime Minister for three or four years. I have not seen him for a longer time. I have been here for a very long time. I see, Sir, that in every House, the Lok Sabha, the Rajya Sabha and everywhere these arguments, counter-arguments and repartees take place. My friends were objecting to certain remarks. My point is that if you would have seen Raj Narain sitting here and Bhupesh Gupta sitting there, and other old people, there was much more din then than what it is now. So he should not have said that there is din. (*Interruptions*).

MR. CHAIRMAN: Are you propagating that there should be din?

SHRI A. G. KULKARNI: Even in the last session, before the elections, my friends, Gopalsamy, Virendra Verma and Yashwant Sinha were coming here in the well of the House.

विपक्ष के नेता (श्री पी० शिव शंकर) : सभापति जी, मुझे एक मिनट निवेदन करने की इजाजत दीजिए । हम प्रधान मंत्रीजी का आदर करते हैं और उनको आदर से सुनना भी चाहते हैं । नोंक-झोंक तो चलती ही रहती है, लेकिन प्रधान मंत्रीजी से, यह शब्द जो "शोर की" बात है, वह उनकी जगह को देखते हुए कुछ अच्छा नहीं लगता है । मेरा ऐसा सविनय निवेदन है कि वह यदि इस शब्द को वापिस ले लें तो अच्छा रहेगा ।

श्रीमती अमृता प्रीतम (नाम-निर्देशित) : सभापति जी, मेरी एक छोटी-सी गुजारिश है कि अगर प्रधान मंत्री जी इतना सा कह दें कि कुछेक सालों से यह परम्परा हुई है क तर्क की जगह शोर ने ले ली, तो जर्नलायजेशन हो जायेगा ।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : माननीय सभापति जी, अगर आप मेरे शब्द देखें तो मैंने "सदन" शब्द प्रयोग नहीं किया है; मैंने जनजीवन कहा है. . . (व्यवधान). . .

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : सदन कहां है.... (व्यवधान)... आपने राज्य सभा कहा है ।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : आप पुन: देख लें । मान्यवर, रिकार्ड मंगाकर देख लें ।

श्री सभापति : मैं रिकार्ड देख लूंगा ।

श्री पी० शिव शंकर : प्रधान मंत्रीजी से मेरा निवेदन है कि जब यहां से गड़बड़ शुरु हुई, उसके जवाब में आपने कहा है । तो उसका जो संपर्क है, आपके कहने का, वह जुड़ जाता है । मैं तो निवेदन कर रहा हूं आप से । आप इतना महान स्थान ग्रहण किए हुए हैं, आप बहुत महान पदवी पर हैं, आप कम-से कम सोचिए इस बात के लिए । आपके लिए शोभा नहीं देता, चाहे यहां जो कुछ भी हो, प्रधान मंत्री जी के लिए शोभा नहीं देता ।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : सभापति जी, रिकार्ड सही होना चाहिए । मैंने कहा है, "जन-जीवन के अन्दर" , सदन नहीं कहा । ... (व्यवधान)...

श्री सभापति : मैं रिकार्ड देख लूंगा

I will see the record. (*Interruptions*)

SHRI S. K. T. RAMACHANDRAN (Tamil Nadu): The Prime Minister poses himself to be a Buddha. Why is he not magnanimous? (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: The Prime Minister has said that he only referred to the public life and not to the House. (*Interruptions*) Therefore, we should leave it as that. (*Interruptions*)

I am on my legs. You should hear me. (*Interruptions*). The Prime Minister has said that he was referring to the public life. It means that he was not referring to us. That is the natural conclusion (*Interruptions*)

मुझे कहना पड़ेगा कि आप इतना शोर मचाते हैं, मुझे समझ में नहीं आता । अब आप नाराज हो लीजिए । मुझे समझना मुश्किल हो जाता है, आप कैसे बोलते हैं । ... (व्यवधान)...

I have come to the conclusion that it does not mean any disrespect to the House and that is the end of it. (*Interruptions*)

SHRI HARVENDRA SINGH HANSPAL (Punjab): Sir, I want to make one point, only one point. (*Interruptions*)

प्रधान मंत्री महोदय ने यह कहा, वह ईल्ड करते हैं ... (व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: The Prime Minister has yielded.

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल : प्रधान मंत्री महोदय ने यह कहा कि राज्य सभा एक ऐसा सदन है जिसकी कुछ मर्यादाएं हैं उन मर्यादाओं को मेंनटेन करना चाहिए । इसी संबंध में उन्होंने शोर की बात और तर्क की बात कही .. (व्यवधान)

श्री सभापति : मैंने कहा न कि वह मैं देख लूंगा ।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल : मेरी बात पूरी हो लेने दीजिए, फिर आप जैसा मर्जी करिए ।

श्री सभापति : मेरी बात करने के बाद अब सवाल नहीं उठता । अब आप नहीं उठाएंगे ।

The matter is over as far as I am concerned. (*Interruptions*)

SHRI SYED SIBTEY RAZI (Uttar Pradesh): Mr. Chairman, Sir, I want to raise a point of order, if you permit me.

MR. CHAIRMAN: No point of order. Please take your seat.

SHRI SYED SIBTEY RAZI: It is not related to this issue.

MR. CHAIRMAN: No. (*Interruptions*) He did not mean any disrespect to the House.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मान्यवर, मैं तो आपके हाथ में हूं आपने फैसला कर दिया, मैं मानता हूं, स्वीकार है, बहुत आभार प्रकट करता हूं । . (व्यवधान)...

चेयर का फैसला हो गया, वह हमको स्वीकार है, मर्यादा है इस सदन की उस मर्यादा को रखना चाहिए। ... (**व्यवधान**) ...

डा० रत्नाकर पाण्डेय : . कि आपके हाथ में है और आज कहा कि आपके हाथ में हूं। यह किसके हाथ में हैं, इससे सावधान रहने की जरूरत है, मैं कहना चाहता हूं।

श्री सभापति : देखिए, मेरा फैसला यह था कि आप किसी प्रकार से सदन की अवज्ञा नहीं करना चाहते। ठीक है न।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : जी। बिल्कुल।

श्री सभापति : तो यह कह दीजिए।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : जी। अच्छा।
... (**व्यवधान**) ...

श्री सुरेन्द्र सिंह (हरियाणा) : आप पंजाब और कश्मीर की बात करें ...

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : सभापति जी, मैं आभार प्रकट करता हूं कि शांति का वातावरण आ गया है और मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि एक राजनीतिक विकल्प की प्रक्रिया जो शुरू हुई है उसे मैं सरकार के बदलाव से भी ज्यादा महत्वपूर्ण मानता हूं क्योंकि सरकारें तो पांच साल की अवधि में बनती रहती हैं लेकिन राजनीतिक आॅप्शंस या विकल्प की प्रक्रिया केवल पांच साल की परिधि के अंदर नहीं समाप्त होती। इसका दीर्घकालिक प्रभाव पडता है और यह दीर्घकालिक प्रक्रिया है। तो इस महत्वपूर्ण प्रक्रिया की जो शुरूआत हुई है वह बहुत महत्वपूर्ण है और ...

SHRI SYED SIBTEY RAZI: If you yield for a moment, I would like to make a point. *(Interruptions)*. The Prime Minister is misleading the House.

MR. CHAIRMAN: No, no.

SHRI SYED SIBTEY RAZI: Sir, just one minute.

सर, यह राजनीतिक प्रक्रिया नहीं है। यह कहना कि यह जो प्रक्रिया शुरू हुई है वह पहली बार हुई है तो ऐसा नहीं है। सरकारों के इतिहास में सबसे पहले 1967 में यह हुआ है। उसके बाद 1977 में केन्द्र में हुआ है ... (**व्यवधान**)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : इनको भाषण का मौका दिया जाय। अगर बहस अभी चल रही है तो मैं सबको सुनकर इक्ट्ठा जवाब दूंगा। मैंने यह पहले ही कहा है कि प्रक्रिया अभी पूरी नहीं हुई है, यह प्रक्रिया अभी चल रही है, यह मैं पहले ही कह चुका हूं और उसके बाद हम लोगों पर जिम्मेदारी है, जनता हम से पूछती है, हम पर जिम्मेदारी है ... (**व्यवधान**)

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Uttar Pradesh): But you are not responsible. Jayaprakash Narayan was responsible for creating national alternative and all the followers of Jayaprakash Narayan are sitting there.

THE MINISTER OF FINANCE (PROF. MADHU DANDAVATE): We have been in the association of J.P. for a longer time.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: He has no regard for J.P. That has been proved by associate of Jayaprakash Narayan.

PROF. MADHU DANDAVATE: He is talking of J.P.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मान्यवर, मैं निजी मामलों में नहीं जाना चाहता। मान्यवर, अगर हर वाक्य पर बहस हो तो मैं तैयार हूं और रात भर बैठ सकता हूं। मैं बड़े इत्मीनान के साथ आया हूं।

तो मैं कह रहा था कि एक शुरूआत जरूर हुई। पहले भी जो इस तरह की प्रक्रियाएं चली हैं उनमें जयप्रकाश जी का बडा योगदान था और तब एक प्रक्रिया शुरू हुई थी। लेकिन मैं इधर के वर्षों की बात कह रहा हूं।

इधर के वर्षों की बात कर रहा हूं, उसी परिप्रेक्ष्य में आप इसे देखिए ... (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : आप परिवर्तन की बात कर रहे हैं, परिवर्तन का युग तो अब शुरू हुआ है ...

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : आप जो कुछ कहना चाहते हैं, सब कह दीजिए। ... (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : सब कैसे कह देंगे ? बीच बीच में कहेंगे। .... (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : इतनी देर का मेरा प्रयास अब सफल हुआ। अब बात बाहर निकल आई कि बीच बीच में हर जगह कहेंगे ... (व्यवधान)

श्री पवन कुमार बांसल : ये चाहते हैं कि इनके जवाब में हम कुछ कहते रहें...

SHRI S. K. T. RAMACHANDRAN (Tamil Nadu): The Prime Minister says that the cat is out of the bag. The whole world is watching the squabbles between No. 1 and No. 2 in the Government.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मान्यवर, जो दूसरी प्रक्रिया शुरू हुई है, एक कोशिश हम लोगों की है कि व्यक्तिवादी राजनीति के बजाए मुद्दों के आधार पर राजनीति की नींव डाली जाए और मौजूदा सरकार को यह समर्थन मिल रहा है सारे सहयोगी दलों से चाहे वे वामपंथी दल हों, भारतीय जनता पार्टी हो। कोई व्यक्तिगत मुझे नहीं मिल रहा है, किसी एक व्यक्ति को नहीं दे रहे हैं, कोई मेरे नाम से वह समर्थन नहीं दे रहे हैं, वह जो कार्यक्रम है उसको समर्थन दे रहे हैं और यह भी एक बहुत अहम चीज है कि एक माइनॉरिटी गवर्नमेंट मुद्दों के आधार पर सहयोग प्राप्त करे किसी व्यक्तिगत आधार पर नहीं क्योंकि वह लोग सत्ता में साझीदार नहीं हैं, , वह लोग मंत्री नहीं हैं ... (व्यवधान)

डा० रत्नाकर पाण्डेय : माननीय सभापति जी, काश्मीर में पाकिस्तानी झंडे गाड़े जा रहे हैं, यही समर्थन इनको मिल रहा है। अटल बिहारी वाजपेयी कहते हैं कि 370 नहीं रहनी चाहिए और आप कहते हैं रहनी चाहिए।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मान्यवर, इस तरह से कभी नहीं रहा। हर वाक्य पर एक सज्जन खड़े हो जायें और कुछ कहते रहें। ऐसा कभी नहीं रहा है सदन में। मैं जूनियर मिनिस्टर रहा हूं, तब से आज तक देखता रहा हूं, तब से ऐसा नहीं हुआ ...

कुमारी आलिया (उत्तर प्रदेश) : जो आप फरमा रहे हैं, आप बाहर से समर्थन ले रहे हैं ... (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : बहरहाल मैं अपनी बात पूरी करके ही जाऊंगा। इस तरह नहीं कि टोकाटाकी करने से रुक जाऊंगा। ... (व्यवधान) आपकी डिक्टेशन लेकर मैं पढ़ूंगा ? आपके आते ही यह ड्राफ्ट दे दें और मैं पढ़ दूं ? ... (व्यवधान)

... बेग : ...न्यवर, किस कीमत पर ... (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : अध्यक्ष जी, मैं निवेदन कर रहा था कि मुद्दों के आधार पर जो सहयोगी दल मुझे सहयोग दे रहे हैं, वे सरकार में शरीक नहीं हैं। यह कहना कि सत्ता हथियाने के लिए सहयोग है, यह बात नहीं है। वे मंत्री नहीं हैं और वे सरकार के साथ पावर में साझीदार नहीं हैं। लेकिन जो कार्यक्रम है उन कार्यक्रमों को लागू करने के लिए उनका समर्थन है और व्यक्तिवादी राजनीति से हटकर जो मुद्दों की राजनीति हैं लिए उसके आधार पर समर्थन दे रहे हैं। ... (व्यवधान)

SHRI RAOOF VALIULLAH (Gujarat): They are running the Government from outside.

SHRI SURESH KALMADI (Maharashtra): At what price?

SHRI RAOOF VALIULLAH: What price are you paying?

(Interruptions)

SHRI T. R. BALU (Tamil Nadu): Sir, they are going on giving a running commentary. It is not fair on their part. ....*(Interruptions)*....

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : लेकिन जो कार्यक्रम हैं उनको लागू करने के लिए उनका समर्थन है। तो एक व्यक्तिवादी राजनीति से हटकर के जो मुद्दों की राजनीति है उसका एक आधार है और कीमत तो देश ने तब दी है जब एक प्रधान मंत्री को आसमान पर चढ़ा दिया जाता है तथा जब वह गिरता है तो वह कीमत आप लोगों ने दी है व्यक्तिवादी राजनीति की।

..(व्यवधान)..मैं आ रहा हूं पंजाब पर। आप बैठें तो। ..(व्यवधान)..आपके यहां बहुत रिप्लाई के लिये रहना पड़ेगा, मैं ऐसे कैसे चला जाऊंगा आप दोनों चीज कह रहे हैं।

..(व्यवधान)..

MR. CHAIRMAN: May I say, a few words?

मैंने इसमें पहले यहां प्रोजाइड किया है लेकिन जब प्रधानमंत्री बोलते थे तो अपोजिशन जो इधर बैठे हैं उधर बैठते थे, लेकिन वे इंटरप्शन करते थे लेकिन जितना आपने किया है उतना नहीं करते थे। No, I will not allow it. You have interrupted quite enough. There is an etiquette, there is a system in the House that the Prime Minister is heard. This has been followed in the last two years or so when I have been in the Chair, and this we should continue. That is my request. Let us continue good traditions and establish better traditions, if we can.

..*(Interruptions)*.

PROF. MADHU DANDAVATE: Even when the Leader of the Opposition speaks, we remain pin-drop silent. Mr. Shiv Shanker has never been interrupted.

श्री सभापति : देखिए मेरी इजाजत के बिना आप लोग जो बोलेंगे वह रिकार्ड पर नहीं आएगा। क्योंकि मैं बिल्कुल निश्चित रूप से कहता हूं कि यह इस सदन की ट्रेडिशन नहीं रही है जो इस समय हो रहा है। मैंने देखा है प्रधानमंत्री को बोलते हुए और प्रधान मंत्री जब बोले थोड़ा इंटरप्शन हुआ, लेकिन इस हद तक नहीं। लेकिन जो हमारी ट्रेडिशन थी उनको बेहतर नहीं बना सके तो कम से कम उन ट्रेडिशन पर कायम रहे, मेरा प्रार्थना है। इसलिए मैंने यह कहा कि अगर आप टोकाटाकी इतनी करेंगे तो मुझे जो कायदा है, कानूनन हक है आपकी टोक-टाकी रिकार्ड पर नहीं जाएगी। यह मुझे करना पड़ेगा, सीधी बात है। आप कोई बात कहना चाहते हैं, प्रधान मंत्री इल्ड करते हैं, आप अपनी बात कहिए, वह जवाब देंगे, और उसके रास्ते निकलते हैं, लेकिन एक नियम है, एक कायदा है, कायदे के अंदर आप अपनी बात बीच में कहिए, वे सुनेंगे और उसका जवाब देंगे और काम हमारा आगे चलेगा।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : धन्यवाद, मान्यवर, तो अभी बात कही गयी, धारा–370 की बात बतायी गयी कि सहयोगी दल और वर्तमान सरकार में मतान्तर है। मतान्तर रहते हुए भी सहयोग का एक व्यापक क्षेत्र है और यही चीज समझने की बात है कि मतांतर को ईमानदारी से हम लोग रखते हैं। सरकार ने कहा कि 370 आर्टिकल के हम लोग उसके पक्ष में हैं, उसका हम समर्थन करते हैं। भारतीय जनता पार्टी का उससे मतान्तर है और उनका मतान्तर है तो एक ईमानदारी से उन्होंने अपना मत रखा, हमने अपनी बात रखी। विचारशील मतान्तर विवेकहीन मतैक्य से बहुत बेहतर है। वह जनतंत्र को सुदृढ़ करता है। और विवेकहीन मतैक्य जो है

वह जनतंत्र की कब्र खोदता है । इसलिए मान्यवर, मैं तो जनतांत्रिक ढंग से मतान्तर को धीरज से सुन रहा हूं और धीरज से सुनता रहूंगा, आपका आदेश है । लेकिन जो व्यक्तिवादी राजनीति है जिससे जनतंत्र का ह्रास होता है उससे हट करके एक प्रक्रिया शुरू हुई । मैं समझता हूं कि इस प्रक्रिया को चारों तरफ सुदृढ़ करने की आवश्यकता है, इधर भी है उधर भी है । . . . (व्यवधान) . . .

श्री राम नरेश यादव : (हरियाणा में कौन सी राजनीति है ? क्या स्थिति है व्यक्तिगत राजनीति है कि नहीं (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मैं उसी पर आ रहा हूं, कोई बिंदु आपका छोड़ूंगा नहीं । (व्यवधान) इसी के साथ एक और प्रयास रहा है उसमें मैं माननीय सदस्यों और हमारे नेता विरोधी दल के जो सदन के हैं उनको भी धन्यवाद देना चाहता हूं और आभार प्रकट करना चाहता हूं कि कुछ राष्ट्रीय मुद्दों पर हम लोग एक साथ आ सकें । हमारे और आप में सौ फीसदी मतान्तर नहीं है । कुछ चीजों में हमारा और आपका मतैक्य भी हुआ है और उन राष्ट्रीय मुद्दों में जहां हमारा और आपका मतैक्य हुआ है सौ फीसदी नहीं, कभी-कभी मतैक्य होता है उसमें मैं आपको भी आभार प्रकट करना चाहता हूं । और स्ट्रेट रिकार्ड पर लाना चाहता हूं कि प्रश्न आया 59वें संशोधन का वह आपके लोगों के सहयोग के बिना नहीं हो सकता था । हमने निवेदन किया, आपने सहयोग दिया और उसमें संशोधन हो गया ।

अभी नामीबिया में भी एक साथ हम लोग गए, सब दल गए ।

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी : सब दल नहीं, चन्द दल गये (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : जम्मू-कश्मीर पर भी सब पार्टी की एक कमेटी बनी । रिजर्वेशन पर आये । उसमें एक साथ बिल पास किया । इस चीज की पकड़ होनी चाहिए कि कुछ मद्दे जो राष्ट्रीय स्तर के हैं, राष्ट्रीय कसर्न के हैं उनमें हम लोगों का मतैक्य रहे, कांसैंस की एक राजनीति करें । उसमें मैं आप को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि पूरे आदर के साथ विपक्ष को लेकर चलना चाहता हू क्योंकि राष्ट्रीय मुद्दों पर वह दलों से ऊपर के मुद्दे हैं, वह राष्ट्रीय हैं । उसमें एक तरह के कांसैंस की राजनीति की जो शुरुआत की गयी है उसको भी मैं बहुत महत्वपूर्ण समझता हूं खासकर उसमें जो एक हिंसा की राजनीति की ओर चल रहे हैं राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जो परम्परा यहां नहीं थी । गांधी जी ने अहिंसावादी परम्परा डाली । हम सब लोगों का मानस राजनीतिक हिंसा की ओर नहीं जाता था—चाहे इधर बैठे हों या उधर बैठे हों । लेकिन अब हम सब पर एक चुनौती आ गयी है कि राजनीतिक लक्ष्यों को अहिंसा द्वारा प्राप्त किया जाए । यह चुनौती पूरे जनतंत्र को है । इस चुनौती का सामना हम सब लोग मिल कर कर सकते हैं । इसलिए आज कांसैंस की राजनीति, रीकांसिलेशन की राजनीति मैं समझता हूं यह जनतंत्र के ढांचे पर बहुत आवश्यक है । इसमें हम आपसे नम्रतापूर्वक सहयोग की प्रार्थना भी करेंगे और आपने जिन मुद्दों पर सहयोग दिया उस पर आभार भी प्रकट करते हैं ।

आपने कहा कमियां हैं । यह नहीं कि सौ दिनों में हम से कोई कमियां नहीं हुई । हम लोग जनता की ओर से सरकार में आये हैं, यह नहीं कि सरकार की ओर से जनता में आये हैं । केवल सरकार का ढिंढोरा पीटना हम लोगों का काम नहीं है ।

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): What is your mandate? Your mandate is 144 seats.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मैं वहां पर भी आ रहा हूं, थोड़ा धीरज तो रखिये, मैं उनप भी जाऊंगा । हम लोग जागरूक रहें कि सरकार के अगर ढिंढोरा पीटने वाले रह जायेंगे हम लोग तो हम जन-प्रतिनिधि नहीं रहेंगे, सरकारी अफसर

हो जायेंगे। सरकारी अफसरीकरण की जो राजनीतिक प्रक्रिया होती है सत्ता आने पर उससे बचना चाहते हैं और सरकार के अंदर भी जनता की आवाज को जिंदा रखना चाहते हैं और उसमें विपक्ष से बड़ा बल मिलता है। उसमें विपक्ष का काम है आवाज उठाने का। हमसे सौ दिन के अंदर हो सकता है कमियां भी हुई हों, हुई हैं, कुछ का हम को अंदाजा भी है। लेकिन अपने संघर्ष में जिन मुद्दों को लिया गया है, उसकी कभी चुनौती आई, उन मुद्दों में सरकार को चुनना पड़ा तो हम उन मुद्दों को चुनेंगे, सरकार को नहीं चुनेंगे। एक सही जनतांत्रिक परम्परा डालने के लिए हम एक सरकार को न्यौछावर करने के लिए तैयार हैं, लेकिन वह राजनीति नहीं चलाना चाहते हैं कि एक सरकार को कायम करने के लिए सारी राजनीतिक परम्पराओं की आहुति दे दें... (**व्यवधान**) मैं आ रहा हूं। मैं एक निवेदन तो कर लूं। जितने बिन्दु माननीय सदस्यों ने उठाये हैं वे सब मेरे पास हैं, मैं क्रमशः उनका उत्तर दूंगा। लेकिन कभी एक बिन्दु को लें और कभी दूसरे बिन्दु का उत्तर देने के लिए कहें तो उसका कोई सिलसिला नहीं बैठता है... (व्यवधान) मैं आ रहा हूं, उस बिन्दु पर भी आऊंगा मैं मुकर कर जाने वाला नहीं हूं। साहस के साथ [illegible] हूं, साहस के साथ ही जवाब भी दूंगा। मैं मुकर कर जाने वाला नहीं हूं... (व्यवधान) श्री राम अवधेश जी, आपके रहते दूसरा हिम्मत कौन कर सकता है? इन सब हमारे तर्क और आपके तर्क, इनके ऊपर फैसला करने वाली जनता है जो हम लोगों से ऊपर है। केवल सत्ता पक्ष और विपक्ष के अन्दर ही देश नहीं बना है। सत्ता पक्ष और विपक्ष के अलावा जन पक्ष भी है और वही दोनों का फैसला करता है। उसका एक फैसला, हम बहस और बिन्दु कितना भी करें, ऐसेम्बली के चुनाव में भी हुआ है। आपने सारे तर्क रखे, हमने सारे तर्क रखे और उन तर्कों पर जनता ने एक फैसला दिया और वही जनतंत्र में अंतिम फैसला होता है। इसलिए सौ दिनों के अन्दर जो आखिरी फैसला जनता ने दिया है वह तो स्पष्ट है कि वह आपके पक्ष में नहीं हुआ है... (**व्यवधान**)

कुछ माननीय सदस्य : आपके पक्ष में भी नहीं हुआ है।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मान्यवर, वे जो तर्क हैं उन पर आखिरी जज तो जनता है। जज का फैसला हो चुका है। फैसले के बाद बहस नहीं रह जाती है, थोड़ी देर के बाद अपनी तैयारी रखिए फिर बहस रखिए। शायद हमारी कुछ गलतियां हों, उनको पेश करिए। हम भी पेश करेंगे, फिर फैसला होगा। अभी तो फैसला हो गया है।

श्री विठ्ठलराव [illegible] : मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या महाराष्ट्र में जनता दल के सदस्यों ने स्पीकर के चुनाव में कांग्रेस को वोट नहीं दिया है?

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : क्यों इतनी बहस करते हैं। राजस्थान में देखिए, कितना हम लोग मिल-जुल कर चले हैं। कांग्रेस की राजनीति में एक कांग्रेस के हो गए, एक जनता दल के हो गए, एक भारतीय जनता पार्टी के हो गए और एक स्वतंत्र भी हो गए।

श्री [illegible] : यू०पी० और बिहार की बात कीजिए।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : यू० पी० और बिहार में तो निपट चुके हैं। अब बात बंद कीजिए यू० पी० और बिहार की। बिहार में इनके चार सदस्य आए हैं लोक सभा में। अब भी कल्पना है कि बिहार में सत्ता में हैं। यह भ्रम जल्दी दूर कर दीजिए। इससे नुकसान होता है, यह भ्रम रहने से।

[illegible] (बिहार) : आप भी सत्ता में नहीं हैं बिहार में, माफ कीजिए।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : अब आपकी खुद सत्ता में रहने की कोई आशा नहीं रही। थियेटर पर देखते हैं कि कौन ऐक्ट कर रहे हैं और अब तो वे एक दर्शक के रूप में हो गए हैं, मंच पर आने की कोई आवश्यकता नहीं है। मान्यवर, हम जानते हैं

कि केसरी जी पुराने लोगों में से हैं। वे बहुत कुछ जनतांत्रिक ढंग से कह भी लेते हैं, चोट भी कर लेते हैं और जनतांत्रिक ढंग से चोट भी सह लेते हैं। इसलिए हम जानते हैं कि हम उनसे कुछ कह सकते हैं... (व्यवधान) ...केसरी जी का उदाहरण देखिए, कितनी शांति से उन्होंने इतनी बड़ी भारी बात सुन ली। इसी तरह से जनतंत्र चलता है।

श्री सुरेन्द्र सिंह ठाकुर (मध्य प्रदेश) : मंच पर आने की हिम्मत हमारी नहीं हो सकती लेकिन जनता जरूर लेकर आएगी।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : फिर, मान्यवर, कहा गया कि ये कमजोर हैं, यह अनिर्णय की दशा में रहते हैं। एक गीत हो गया है, राजनैतिक गीत हो गया है। चूंकि हम कमजोर हैं इसलिए हम इधर हो गए और आप मजबूत हैं इसलिए आप उधर हो गए हैं ... (व्यवधान) ... हमारी कमजोरी से भी सीखिए। आप जो बिन्दु उठायेंगे उनका मैं जवाब दूंगा। आप कहते हैं कि हम कमजोर हैं तो मैं बता रहा हूं कि हम अपनी कमजोरी की वजह से इधर हैं और आप अपनी मजबूती की वजह से उधर हैं। यह मैं बड़े आदर के साथ कह रहा हूं लेकिन तब भी आप सुनने के लिए तैयार नहीं हैं।

श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी : बोफोर्स की वजह से आए और बोफोर्स की वजह से जायेंगे।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : अभी आखिरी गोला नहीं दगा है।

तो यह हमारी कमजोरी और अनिश्चय का ही सबूत है। हमारे अनिर्णय की वजह से, कमजोरी की वजह से तीन साल जिस लोकपाल बिल को आप नहीं ला सके उसको हम लोग पहली बार में ले आए, यह हमारी कमजोरी का लक्षण है। हमारी कमजोरी का लक्षण, हमारे अनिर्णय का लक्षण एक और है, मान्यवर...

श्री बेकल उत्साही (उत्तर प्रदेश) : सभापति महोदय, मेरी गुजारिश यह है कि हमारे सदन के नेता कमजोरी और मजबूती की बात कर रहे हैं। लेकिन हमें खेद है कि हम उनके भाषण में शरीक नहीं हो पायेंगे। हमें जुमे की नमाज पढ़ने की इजाजत दी जाय। ..(व्यवधान)...

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मुझे स्वीकार है।

MR. CHAIRMAN: The Prime Minister will continue his reply after 2 O'clock.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : जुमे की नमाज के लिए स्वीकार है। I agree.

MR. CHAIRMAN: Now, the House stands adjourned till 2.00 P.M.

The House then adjourned for lunch at one of the clock.

— —

The House reassembled after lunch at two of the clock, the Deputy Chairman in the Chair.

Motion of thanks on President's Address—Contd.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The hon. Prime Minister will continue.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : माननीया, मैं अर्ज कर रहा था कि हम लोगों की कमजोरियां रही हैं (व्यवधान)

श्री राम नरेश यादव : कमजोरी यह है कि जरा सत्ता पक्ष के लोगों की संख्या उधर देख लें, क्या स्थिति है (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मैं तो आपकी उपस्थिति के लिए अनुगृहीत हूं।

श्री राम नरेश यादव : हम लोग तो सुनना चाहते हैं (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : यह कमजोरी का लक्षण रहा है, हमारे अनिर्णय का लक्षण रहा है कि हमने निर्णय कर के पोस्टल बिल वापिस लिया जो वर्षों तक पड़ा हुआ था आपके तथाकथित निर्णय के बाद भी। यह हम लोगों की कमजोरी का लक्षण है।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : 59वां अमेंडमेंट भी वापिस ला रहे हैं (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : 59वें संशोधन में जीने के अधिकार को नहीं लिया जाएगा। उस में इमरजेंसी को क्लाजेज नहीं रहेंगी। ऐसे सवाल क्यों उठाते हैं जहां पर जानते हैं कि अटेक फिर आ जाएगा। कुछ उठाने के पहले से जान लिया कीजिए (व्यवधान)

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): What about the Muslim Women Bill? Are you going to withdraw it? *(Interruption)*

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मैं उस पर आ रहा हूं, चिन्ता न करें।

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Are you going to repeal the Muslim Women Bill? After thinking, I am asking you. *(Interruption)*. Is that another sign of weakness?

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : या तो क्वेश्चन-आवर की तरह सप्लीमेंट्रीज हो जायें और मैं जवाब देता रहूं या फिर मैं डिबेट का जवाब दूंगा (व्यवधान)

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Are you going to withdraw the Muslim Women Bill? That is enough.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : क्या कह रहे हैं, क्या सवाल किया है आपने ? मुस्लिम पर्सनल ला को नहीं टच कर रहे हैं। यह मैं बहुत साफ तौर से कह रहा हूं, भ्रम में मत रहिए। रिकार्ड में कर दीजिए (व्यवधान) आप लोग दुविधा में रहते हैं, हम लोग दुविधा में नहीं रहते हैं। (व्यवधान)

श्री पवन कुमार बांसल : अगर प्रधान मंत्री जी अपने जवाब को खुद क्वेश्चन-आवर की तरह न बनायें तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मैं नहीं बनाता हूं, आपके उधर से सवाल आते हैं (व्यवधान)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: We definitely want to listen to you because the matter is important. We want to listen to each and every word of what you say. But Madam, if he shuns this arrogance, I suppose, that will be good.

SHRI A. G. KULKARNI (Maharashtra): Bansal Ji, may I request you that let us listen to the Prime Minister because by provoking, he is attacking more. He is playing a cunning game. Let us not provoke him.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : कुलकर्णी जी बहुत बुजुर्गों में से हैं। हम सब लोग, चाहे उधर हों या इधर, उनका आदर करते हैं। वे अनुभवी हैं और इतने अनुभव के बाद सलाह दे रहे हैं, मान लीजिये उनकी बात आप। यह भी हम लोगों के अनिर्णय का सबूत रहा कि आते ही हम लोगों ने वचन दिया कि टी० वी० और रेडियो को हम लोग स्वायतता देंगे, हमारे अनिर्णय का ही यह नतीजा है कि उसका बिल पहले ही सेशन में ले आए। यह भी हमारी कमजोरी और हमारा अनिर्णय का लक्षण और सबूत है कि भोपाल गैस त्रासदी से इंटेरिम कम्पनसेशन जो पड़ा हुआ था उस पर हम लोग निश्चयपूर्वक फैसला ले चुके हैं। यह भी हमारी कमजोरी और अनिर्णय का सबूत है कि गांवों के अन्दर जो नौजवान रहते थे वह कहते थे हमारी एग्जामीनेशन के लिये आयु सीमा बढ़ा दी जाये और यह मांग कई वर्षों से पड़ी हुई थी, कुछ ही महीनों के अन्दर उनकी आयु सीमा 26 से बढ़ा कर 28 वर्ष तक बढ़ा दी गई जिसमें हमारे ग्रामीण क्षेत्रों के नौजवानों को मौका मिलेगा। यह भी हमारी कमजोरी का लक्षण है और हमारे अनिर्णय का सबूत है (व्यवधान)

डा० रत्नाकर पाण्डेय : उपसभापति महोदया, इसी संदर्भ में प्रधानमंत्री जी से एक चीज जानना चाहूंगा कि इन्होंने

जो अवस्था, जो उम्र... (व्यवधान) मैं काम की बात कर रहा हूं... (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : माननीया, ये रूलिंग दे दें कि क्वेश्चन आवर की तरह चलेगा । सप्लीमेंट्रीज के साथ जो सवाल उठायेगा, उत्तर दें... (व्यवधान)

डा० रत्नाकर पाण्डेय : मैं इसलिये बात कर रहा हूं कि इसका फिर उत्तर देना होगा ... (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मैंने नहीं सवाल उठाया ।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : मैं यह कह रहा हूं कि बहुत दिनों से पब्लिक सर्विस कमीशन में यह मामला पेंडिंग पड़ा हुआ है कि भारतीय भाषाओं में परीक्षा ली जाये और हम लोग मुफ्ती मोहम्मद सईद साहब से, आपके गृह मंत्री से मिले थे, उन्होंने भी आश्वासन दिया कि पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षायें भारतीय भाषाओं में होंगी और उसके लिये... (व्यवधान) आज तक उसकी कोई रिपोर्ट नहीं आई है । जब आप उम्र बढ़ा रहे हैं तो उसके साथ ही भारतीय भाषाओं में परीक्षा दिये जाने का क्या प्रावधान कर रहे हैं ? प्रधान मंत्री जी उत्तर दे रहे है मैं जानना चाहता हूं कि इसको कब तक आप चालू करा देंगे, इस पर भी प्रकाश डालें ।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : हम लोगों ने अपना जो फेडरल स्ट्रक्चर है उसके प्रति प्रतिबद्धता घोषित की और हमारी कमजोरी रही है, हमारे अनिर्णय की स्थिति रही है कि जो संविधान के अन्दर इंटर स्टेट काउंसिल थी, जो 40 साल नहीं लागू हो सकी, उसको हम लोगों ने बनाया और यह आपके सामने है । यह भी हमारी कमजोरी का हमारे अनिर्णय का लक्षण है कि बाबा भीम राव अम्बेडकर की नव बौद्धों की जो एक अभिलाषा थी, एक सपना था कि उनको वे अनुसूचित जाति और जनजाति की सुविधायें मिलें तो अपने सौ दिन के कार्यकाल में हम लोगों ने उसके बारे में भी निर्णय किया और उसके संबंध हम लोग कानून भी ले... (व्यवधान) आयेंगे । उसमें आपके सहयोग की जरूरत पड़ेगी... (व्यवधान) ठीक है, अच्छा है (व्यवधान) आपके सहयोग की उसमें जरूरत पड़ेगी, आपका सहयोग मिलेगा मुझे विश्वास है, और यह भी हमारी कमजोरी का, अनिश्चय का सबूत है । मैं अपनी कमियां बता रहा हूं उसमें क्यों तकलीफ हो रही है... (व्यवधान)

SHRI A. G. KULKARNI: Why are you unnecessarily telling us that you are weak? You are not weak. You are quite strong. *(Interruptions)*. Madam, let him speak of the positive achievements of his Government. I don't call you weak. You are quite strong. *(Interruptions)*.

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Madam, it is his personal opinion. It is not my opinion. *(Interruptions)*.

कुमारी सरोज खापर्डे : (महाराष्ट्र) : मैडम, आपके माध्यम से एक निवेदन करना चाहती हूं । सौ दिन की सरकार में, मतलब जो भी आपने चीजें हासिल की हैं उनके बारे में हाउस को जब आप अवगत कराते हैं तो व्यंग्यात्मक तरीके से अवगत कराने की बजाय मेरा निवेदन है कि प्रधान मंत्री जी सीधे तरीके से सदन के सामने हम सबको उनको निवेदित करें... (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : एक माननीय महिला कह रही है तो मैं क्यों न मानूं...

कुमारी सरोज खापर्डे : प्रधान मंत्री की जो गरिमा है, उस गरिमा को यह व्यंग्यात्मक भाषा शोभा नहीं देती इस लिये मुझे यह कहना पड़ा अन्त में आपसे ... (व्यवधान)

श्री [illegible] (बिहार) : मैं प्रधान मंत्री जी से बहुत अदब से अर्ज करूंगा अगर उनका अन्दाजे गुफ्तगू यह न होता कि यह भी मेरी कमजोरी की निशानी है तो मैं उनका ध्यान दिलाऊं कि दूरदर्शन के मामले में उनकी कमजोरी से कम से कम इस मुल्क के सेक्युलर

और अकलियत लोगों को बहुत दुख है जब टीपू सुल्तान सीरियल, जिस टीपू सुल्तान को जवाहर लाल नेहरू ने एक बहुत बड़ा सेक्यूलर कहा है, उन पर सिरियल पर रोक लगी है ।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : आ रहा है । टीपू सुल्तान सीरियल आ रहा है ।

श्री शमीम हाशिमी : दूसरा, दुख की बात यह है कि टीपू सुल्तान सीरियल को स्क्रीन करने के लिये "आर्गेनाइजर" आर० एस० एस० के अखबार के भूतपूर्व एडीटर मलकानी जी को नियुक्त करना, यह सौंपना आपकी नीयत को शक के घेरे में अक्लियतों और सेक्यूलर लोगों के सामने लाता है । मैं अदब के साथ एक शेर कहकर बैठता हूं ।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : यह क्वेश्चन आवर की तरह चलेगा. . (व्यवधान) तो हम लोगों को कोई एतराज नहीं है हम ऐसे ही चलायेंगे, क्वेश्चन आवर की तरह चलायेंगे ।

श्री शमीम हाशमी : "इस सादगी पर कौन न मर जाये, ऐ खुदा, करते हैं कत्ल, हाथ में तलवार भी नहीं ।"

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : टीपू सुलतान का सीरियल जो है, वह दिखाया जायेगा, उसमें कोई भ्रम नहीं है ।

श्री शमीम हाशमी : कब से ?. . . (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : अच्छा, माननीय महोदया, जो बात आप कहते हैं, उसको मैं स्वीकार करता हूं, तो व्यंग्यात्मक हो जाता है । इस लिये अब मैं उसका उपयोग नहीं करूंगा ।

कुमारी सरोज खापर्डे : व्यंग्य की बात नहीं, मेरा तो सिर्फ इतना अनुरोध है कि . . . (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मैं नहीं करूंगा । मैं कह रहा हूं, आपको स्वीकार कर रहा हूं । तब भी आप एतराज कर रही हैं । ऐसा कैसा एतराज है। . . . (व्यवधान)

SHRI T. R. BALU (Tamil Nadu): How can they go on interrupting the Prime Minister like this? (*Interruptions*)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : हमको कोई एतराज नहीं है . . . (व्यवधान) बीच में आता है, हम आराम से चलते हैं ।

उपसभापति : उन्हें कोई एतराज नहीं है आप बैठ जाइये ।

PROF. SOURENDRA BHATTACHARJEE (West Bengal): They have been the ruling party for such a long time and they must have some decency. . . . . (*Interruptions*) . . . .

AN HON. MEMBER: Please sit down.

PROF. SOURENDRA BHATTACHARJEE: I will sit down only when the Deputy Chairman asks me... (*Interruptions*)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : तो अब मैं न पिछली बात करूंगा और न कमजोरी की बात करूंगा, आगे की बात करूंगा और मजबूती से करूंगा । मजबूती के साथ मैं कहता हूं कि हम लोगों ने एक सोल्जर की बात कही है – वन रैंक, वन पेंशन की बात कही हैं । वह हम ले आये हैं ।

मजबूती की बात कहते हैं और आगे की बात कहते हैं और यह जो मैं कह रहा हूं, इसी सत्र की बातें, हां कुछ अगले सत्र में भी हो सकती हैं, लेकिन इसी वर्ष की बातें हैं ।

मजबूती के साथ कहते हैं और आगे की बात है कि हम लोगो ने कर्ज मुक्ति की बात कही और उसे ले आ रहे हैं और बजट के अन्दर उसकी घोषणा की है ।

मजबूती के साथ कहता हूं कि जो भूमि हीन हैं उनके लिये जो कानून बनाये गये और नौवें शेडूल में अभी नहीं रखे गये, आपके पास थे, मजबूती के साथ कहना चाहता हूं कि हम लोगों ने फ़ैसला किया है कि उसको नौवें शेडल में ले आयेंगे।

अब मैं मजबूत हूं आपकी बात नहीं सुनूंगा। अभी तो कमजोर था, इसलिए सुनता था। अब मैं मजबूती के साथ कहता हूं कि मजदूरों की भागीदारी की बात हम लोगों ने कही और उसका कानून हम इस वर्ष ले आयेंगे, प्रायः पॉकेट बैलट से ले आयेंगे, इसी सत्र में करेंगे और वर्ष के अंदर उसको लागू करेंगे।

मजबूती के साथ मैं कहना चाहता हूं कि इलैक्टोरल रिफार्म्स जो है, आप लोगों के सहयोग से, उसमें सब पार्टियों का सहयोग लेकर के, उसमें भी संशोधन इसी वर्ष हम लायेंगे।

मैं मजबूती के साथ कहना चाहता हूं कि जजेज के एप्वांइटमेंट—अब फोतेदार जी मुस्करा रहे हैं कि उन के पास कितने लोग कवायदें करते थे, वह कवायदें बंद हो जायें।... (व्यवधान)

श्री माखन लाल फोतेदार : (उत्तर प्रदेश) : आपकी बातों पर मुझे मुस्कराहट आ रही है। आप कितना भूल रहे हैं, मैं नहीं कह सकता हूं क्योंकि वह अनपार्लियामेन्टरी वर्ड होगा सत्य से बहुत दूर है, ऐसी बातें कह रहे हैं।... (व्यवधान)

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : बहरहाल मैं समझता हूं कि सत्य का फीता फोतेदार जी के पास है, जिससे कि वह नाप लेते हैं कि कितना सत्य है।

श्री माखन लाल फोतेदार : आपका सत्य हमने मेहम में देख लिया।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : जजेज के लिए, उनकी नियुक्ति के लिए, उनकी ट्रांसफर के लिए एक विधिवत व्यवस्था हो, इसका भी हम लोग आपके सामने कानून ले आयेंगे। एक बाडी के सुपुर्द होकर यह हो सके, जिसमें कोई भी पार्शलिटी का सवाल न हो।

पंचायतों के विकेन्द्रीयकरण की बात, पंचायतों में महिलाओं को 30 फीसदी स्थान मिलें, इसका भी कानून मजबूती के साथ इसी वर्ष करेंगे। मजबूती के साथ कहना चाहता हूं कि आप लोगों का भी सहयोग लेकर संविधान में काम करने के अधिकार को भी ले आया जाएगा। वर्तमान में अपने संसाधनों के अंदर उसे कैसे कार्यान्वित किया जा सकता है, इस पर भी आप से सलाह ली जाएगी। मैं यह भी कहना चाहता हूं मजबूती के साथ कि गांव के क्षेत्र के अन्दर अपनी योजनाओं के लिए केन्द्र और राज्यों के संसाधन मिलाकर ग्रामीण क्षेत्र में लगें, उस को भी हम मजबूती साथ कार्यान्वित करेंगे। मैं यह भी कहना चाहता हूं मजबूती के साथ कि उर्दू पर जो गुजराल कमेटी की रिपोर्ट रही है, उस का भी हम लोग क्रियान्वयन करेंगे। मैं यहां मजबूती के साथ कहना चाहता हूं कि मण्डल आयोग की रिपोर्ट का भी... (व्यवधान)

श्री राम नरेश यादव : आप कब तक लागू करेंगे? कब तक सरकार लागू करेगी? आपकी मंशा साफ नहीं है केवल घोषणाएं ही घोषणाएं करते रहते हैं हमारे प्रधान मंत्री जी?

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : मैं सदन के अन्दर कह रहा हूं इसे।

SHRI A. G. KULKARNI: Mr. Prime Minister, will you yield for a minute? I only want to know only one thing. Your intention is good, the intention to implement the Mandal Commission Report. But I am a little bit confused because of the resignation by Mr. Devi Lal from the Committee on the implementation of the Mandal Commission Report. Let him resign. But that should not create any problem in implementing it. This is my point.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : वह कोई समस्या नहीं है।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया : वह तो जिस दिन देवी लाल को चेयरमैन बनाया, राम पूजन पटेल ने इस्तीफा दे दिया था।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : वह तो सरकार की जिम्मेदारी है, सामूहिक जिम्मेदारी है हम सब की।

श्री अरविन्द गणेश कुलकर्णी : पर देवी लाल इस सरकार में हैं?

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : एक चीज हम कहना चाहते हैं और खासकर माननीय राम नरेश यादव जी से क्योंकि वे कई बार खड़े हुए कि यही सवाल आप जरा उधर घूमकर कर दीजिए कि मण्डल आयोग की रिपोर्ट .... *(व्यवधान)* ..

श्री राम नरेश यादव : उधर मैं नहीं कह रहा था, लेकिन आप ने दो साल से घोषणा की है। आपने चुनाव का मुद्दा बनाया था, इसलिए मैं बार-बार जानना चाहता हूं कि सरकार कब लागू करेगी क्योंकि आपने मतदाताओं का वोट लिया है। पिछड़े वर्ग के लोगों का वोट लिया है, इसलिए बार-बार मैं आपसे खड़े होकर जानना चाहता हूं कि सरकार कब तक लागू करेगी नहीं तो मैं यह सवाल नहीं करता आप से। दो साल से लगातार आप और सत्ता में आने के बाद बार-बार यह घोषणा करते रहे इसलिए आप से जानना चाहता हूं।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : दो साल के समय में, हम लोग सत्ता में चार महीने ही रहे हैं। एक साल आठ महीने तो वे सत्ता में रहे हैं.... (व्यवधान)... वे सत्ता में थे तो आप उनसे जुड़े। उनसे आपने कितनी बार कहा कि मण्डल आयोग की रिपोर्ट आप लागू कीजिए?

श्री राम नरेश यादव : मैं तो आपसे बराबर कहता था। महोदया, मैंने आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि मैंने बार-बार कहा था कि हरियाणा में लागू कर के दिखाइए क्योंकि वह केन्द्र के लिए ही नहीं थी, राज्य सरकारों के लिए भी थी। वह चाहे तो लागू कर सकते हैं। उस समय आपने लागू नहीं किया। इसलिए आप पर विश्वास नहीं हो रहा है।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : महोदया, राम नरेश जी हम लोगों को ही सम्बोधित कर रहे हैं, वे ठीक है। हम ही करेंगे वे नहीं कर पाए हैं।

श्री राम नरेश यादव : महोदया, मैं जानना चाहता हूं कि जिस दल की तरफ से जिस मोर्चे की तरफ से बराबर घोषणा की जाती रही है कि हम सरकार में आने के बाद तत्काल लागू करेंगे, उसके बाद मैं यह कहना चाहता हूं आखिर डेढ़ साल तक , दो साल तक आप ने कोई कमेटी क्यों नहीं बिठायी और नहीं बिठायी तो उसका क्या कारण था? मैं यह भी जानना चाहता हूं कि आखिर इस रिपोर्ट को कब लागू करेंगे कोई अवधि है, कोई समय है, निर्धारित समय बताने की कृपा करेंगे? इसलिए मैं बार-बार पूछता हूं।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : दो साल के अन्दर जब हम सत्ता में नहीं थे तो मैं कैसे कह देता शिव शंकर जी को कि राम नरेश जी को अध्यक्ष बना दीजिए उस कमेटी का। मान जाते तो हम कह देते आप से। ... (व्यवधान) ...

श्री राम नरेश यादव : हरियाणा में सरकार थी राष्ट्रीय मोर्चे की, आसाम गण परिषद की सरकार आसाम में थी, दूसरी जगहों में थी, उन राज्यों में क्यों नहीं लागू किया?

डा० रत्नाकर पाण्डेय : आप दो साल कैबिनेट में थे, तो क्यों नहीं आपने कैबिनेट में आवाज उठाई? माननीय उपसभापति महोदया, कोई तिथि निर्धारित करें, इसको टाले नहीं। इसको लेकर राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में इस सदन के माननीय सदस्य ने वाक-आउट तक किया है, इसलिए इसको दूसरों पर डालने की कोशिश नहीं करें। आपकी खुली सरकार स्पष्ट तिथि निर्धारित करे।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : माननीय रत्नाकर जी, आपको जानकारी होगी, अभी मैंने श्रम और कल्याण मंत्री जी से कहा है कि मण्डल कमीशन के बारे में अपनी सिफारिशें सीधे केबिनेट में ले आएं।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : कब तक लागू करेंगे आप, कोई स्पष्ट तिथि निर्धारित करिए इस सदन में ?

एक माननीय सदस्य : मण्डल कमीशन के बारे में टाइम बाउन्ड प्रोग्राम आप बताएंगे ?

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : इसकी शुरूआत इसी वर्ष ही जाएगी, टाइम बाउन्ड भी ले लीजिए। . . . (व्यवधान) . . .

श्री वीरेन्द्र वर्मा (उत्तर प्रदेश) : अगर 8 साल तक धैर्य रखा है तो कुछ तो धैर्य रखें। राम नरेश जी, सब्र करो।

श्री शमीम हाशमी (बिहार) : तेरे वादे पे जिए हम तो ये जान झूठ जाना, के खुशी से मर न जाते, अगर एतबार होता।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : माननीय यह डिबेट के जवाब में इस नए स्टाइल का जो प्रादुर्भाव हो रहा है, वाक्य के पूरे होने पर तो कहिए, अधूरे पर ही शुरू हो गए आप तो। मुझे एतराज नहीं, आप चलाएं तो मैं तो सहयोग देने को तैयार हूं।

दूसरी चीज मैं आर्थिक व्यवस्था पर आना चाहता हूं। 6–7 मिनट का समय रह गया है मेरे पास। तो इस संबंध में पहले जो हमारी वित्तीय स्थिति है, जो हम लोगों को हासिल हुई है, वह सही मायने में बहुत ही चिन्तनीय स्थिति, वित्तीय अवधि में हम लोगों को हासिल हुई है। बजट का घाटा सन् 1988–89 में, और मैं आपकी तारीफ करता हूं 5,642 करोड़ था। मैं समझता हूं कि अच्छी व्यवस्था पिछली सरकार ने की कि सन् 1988–89 में बजट का घाटा 5,642 करोड़ था और आया चुनाव का वर्ष और घाटा कहां पहुंचा ? साल पूरा नहीं हुआ। जब यह सरकार सत्ता में आई, उस समय 13,790 करोड़ का घाटा बजट में कर चुकी थी। . . . (व्यवधान) . . .

SHRI JAGESH DESAI: Will you yield for a minute? You have given figures. You had been a Finance Minister and you know very well. The Government got only one instalment of the income-tax in September and that is the smallest. The second instalment comes on December 15, and the largest one comes by March 15. So most of the money usually comes in the form of income-tax only after November. Therefore, don't misguide the people.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : माननीय देसाई जी, इसी 30 नवम्बर, की तारीख से घाटा पिछले वर्ष का भी आप तुलना कर लें मैं आपको आंकड़े दे दूंगा, आपकी राय बदल जाएगी . . . (व्यवधान) . . .

SHRI JAGESH DESAI: On the media or anywhere I am prepared to discuss with you.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : डेट टू डेट कम्पेअर कर लीजिएगा, इस वर्ष और पिछले वर्ष का। 13,700 करोड़ घाटा और पिछले वर्ष से आप तुलना कर लीजिए, उसी तारीख को। . . . (व्यवधान) . . .

डा० रत्नाकर पाण्डेय : वित्त मंत्री के लिए भी छोड़ दीजिए कुछ।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : अरे भाई, वित्त मंत्री के लिए आपने कुछ छोड़ा ही नहीं तो कहां से छूट जाएगा ? . . . (व्यवधान) . . .

डा० रत्नाकर पाण्डेय : आप कहते हैं कि पैसा नहीं है और आपके वित्त मंत्री कहते हैं कि पैसा है। अब खुद आपकी सरकार अस्पष्ट है इसमें। आप कुछ कहते हैं, आपके वित्त मंत्री कुछ कहते हैं।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : पैसा है तो चार महीने में कमाया होगा उन्होंने। आप तो दिवालिया छोड़कर गए हैं, हम तो उस तारीख की बात कह रहे हैं।

श्री विठ्ठलराव माधवराव जाधव: प्रधानमंत्री जी, आपका जो इकनोमिक सर्वे उसमें तो ऐसा नहीं लिखा है कि पैसा नहीं है, जो कि आप कह रहे हैं।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : बहरहाल, बड़ी अच्छी हालत थी और 13,700 करोड़ रुपये का घाटा था हमें ऐसी अच्छी अर्थव्यवस्था, मजबूत अर्थव्यवस्था मिली। पहले कभी इतना घाटा नहीं हुआ था और इसका नतीजा यह हुआ कि सितम्बर के महीने, मध्य सितम्बर में इन्फेलेशन का रेट 9.6 फीसदी था। यह मंहगाई की स्थिति थी। अब आपने इस वर्ष का पूछा है। तो 1990-91 में वित्त मंत्री जी ने जो पहला काम किया है वह यह है कि वर्ष 1989-90 के अंत तक आपने जो 13790 करोड़ का घाटा दिया उसको इस वर्ष के अंत तक 11750 करोड़ रुपये पर उतारा है।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : महोदया, ये राष्ट्रपति के अभिभाषण पर बोल रहे हैं या बजट पर।

SHRI JAGESH DESAI: The Prime Minister is misguiding the House. Maximum revenue comes in the months of December and March.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : माननीय, ये बिन्दु उठाए गए हैं इसलिए मैं उनका उत्तर दे रहा हूं। मंहगाई की बात उठाई गई है इसलिए जब मंहगाई की बात आप उठाते हैं तो आप जानते हैं कि मुद्रा अगर मार्केट में भर दी जाएगी तो किसी के बूते का नहीं कि तुरन्त उसे कब्जे में ला सके। आपने जो यह मनी सप्लाई बढ़ाई है, उसी चीज को बताना चाहता हूं आपके मंहगाई के सवाल के उत्तर में। तो मैं बजट घाटे की बात कर रहा था कि 1990-91 के अन्त में इसको और घटाकर 7,200 करोड़ पर घाटा निर्धारित किया गया कि इसके आगे नहीं बढ़ेगा और इसके लिए यह भी तय किया गया कि कि हम लोग पालियामेंट में बीच-बीच में आएंगे और जो घाटे की स्थिति होगी वह हम पालियामेंट के सामने रखेंगे वर्ष के मध्य में। यह नहीं कि आखिर में यहां आवें और तब सबको पता चले कि इतना घाटा है और इसमें एक लगाम भी लगेगी सरकार के ऊपर सदन की लगाम भी लगेगी और आपकी भी लगेगी कि आपने ये आकड़े दिए थे, अब कहां आप जा रहे हैं। माननीय देसाई जी की लगाम भी लगेगी।

फोरेन एक्सचेंज को ही आप ले लीजिए। 31-3-88 को फोरेन एक्सचेंज रिजर्व 7,247 करोड़ था वह घटकर 31-3-89 में 6,604 करोड़ हो गया और इस सरकार को जब वह मिला तो वह 5,000 करोड़ था। तो यह विदेशी मुद्रा का रिजर्व आप लोगों ने हमको दिया ... (व्यवधान)...

देसाई जी, उन बातों को मत उठाइए, आप तो जानकार हैं।

SHRI JAGESH DESAI: You are borrowing more money from the foreign banks than what was borrowed last year.

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : हमारी कमजोरियों को बताइये लेकिन अपनी ही कमजोरियों पर अंगुली मत रखिये। मैं पुन: दोहराता हूं आंकड़े, आप देख लीजिए। आप विदेशी रिजर्व की बात कर रहे हैं। पिछले दो वर्षों में क्या हुआ कि विदेशी मुद्रा का रिज़र्व 7247 करोड़ था वह 31 मार्च 1989 में 6604 करोड़ हो गया। और जो इस सरकार को विरासत में मिला वह 5044 करोड़ था। कौन विदेशी मुद्रा घटा रहा है? आप हमको कहते हैं? दिवालिया हो गया है। इस स्थिति में और भी अगर देखें तो हमको विदेशी कर्ज से अगर बचना है तो बहुत मजबूत कदम उठाने होंगे और हम कहना चाहते हैं कि हम उसके लिए पेट काटने को भी तैयार हैं। लेकिन आर्थिक गुलामी में जीने के लिए तैयार नहीं हैं। कर्ज में जाने के लिए तैयार नहीं हैं। आपने उस आधार पर देश को लाकर खड़ा कर दिया है। इसलिए कुछ सख्त कदम भी हमको उठाने पड़ें तो उठाएंगे। उस स्थिति को देखें तो पेट्रो-

लियम प्रोडक्टस पर सन् 1988-89 में जो विदेशी मुद्रा खर्च हुई थी वह 4300 करोड़ थी, 1988-89 में वह 5400 करोड़ हो गई और 6400 करोड़ का आयात हुआ और इस समय 1990-91 में पेट्रोलियम मिनिस्ट्री ने 8000 करोड़ का प्रावधान किया था। क्या हम इस स्थिति में इस तरह से देश को पड़ने देना चाहते हैं ? हमको इस फ़ैसले को लेना होगा और जरूरत पड़ेगी तो राशनिंग भी करना पड़ेगा। उससे हम नहीं बचेंगे। लेकिन हम विदेशी कर्ज में नहीं जायेंगे और जनता का सहयोग लेंगे।

महोदया, आप से अनुरोध है कि सोमवार को अवसर दिया जाए इसको समाप्त करने का।

THE DEPUTY CHAIRMAN: The reply on the Motion of Thanks on the President's Address will continue after the Question Hour on Monday.

CINEMATOGRAPH (AMENDMENT) BILL, 1989.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now we will take up Private Members' Business. Now Bills for introduction. The Constitution (Amendment) Bill, 1989—Shri Ajit P. K. Jogi—not here. Smt. Bijoya Chakravarty.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY (Assam): Madam, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Cinematograph Act. 1952.

The Question was put and the motion was adopted.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: Madam, I introduce the Bill.

CODE OF CRIMINAL PROCEDURE (AMENDMENT) Bill, 1989.

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूं कि दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 का और संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाए।

The Question was put and the motion was adopted.

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : महोदया, मैं विधयक को पुरःस्थापित करता हूं।

CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL, 1990 (SUBSTITUTION OF NEW ARTICLE FOR ARTICLE 121).

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूं कि संविधान का और संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाए।

The Question was put and the motion was adopted.

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश) : महोदया, मैं विधेयक को पुरःस्थापित करता हूं।

INDIAN PENAL CODE (AMENDMENT) BILL, 1990.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: (Assam): Madam, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Indian Penal Code.

The Question was put and the motion was adopted.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: Madam. I introduce the Bill.

YOUTH WELFARE BILL, 1990

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY (Assam): Madam, I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for a comprehensive policy for the development of the Youth in the country.

The Question was put and the motion was adopted.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: Madam, I introduce the Bill.